श्री खाटू श्याम चालीसा

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

श्री खाटू श्याम चालीसा

प्रकार	चालीसा
देवता	खाटू श्याम जी
संस्करण	मिलान किया गया पाठ
परम्परा	वैष्णव
स्रोत	51 चालीसा संग्रह (आरतियों सहित) — रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार (2004) — Scan pages 155–158
आभार	पाठ मुद्रित प्रति के स्कैन से लिया गया। सार और अर्थ: उद्योग ज्योतिष सम्पादकीय टीम।
कॉपीराइट	Traditional devotional text in wide circulation. The poet named in the closing verse is a traditional attribution; no mo

श्री गुरु चरण ध्यान धर, सुमिरि सच्चिदानन्द ।

śrī guru caraṇ dhyān dhar, sumiri saccidānanda |

श्याम चालीसा भणत हूँ, रच चौपाई छंद ॥

śyām cālīsā bhaṇat hūm, rac caupāī chaṃd ||

श्याम श्याम भजि बारम्बारा ।

śyām śyām bhaji bārambārā |

सहज ही हो भवसागर पारा ॥ १ ॥

sahaj hī ho bhavasāgar pārā || 1 ||

इन सम देव न दूजा कोई ।

in sam dev na dūjā koī |

दीन दयालु न दाता होई ॥ २ ॥

dīn dayālu na dātā hoī || 2 ||

भीमसुपुत्र अहिलवती जाया ।

bhīmasuputra ahilavatī jāyā |

कहीं भीम का पौत्र कहाया ॥ ३ ॥

kahīṃ bhīm kā pautra kahāyā || 3 ||

यह सब कथा सही कल्पान्तर ।

yah sab kathā sahī kalpāntar |

तनिक न मानों इसमें अन्तर ॥ ४ ॥

tanik na mānoṃ isameṃ antar || 4 ||

बर्बरीक विष्णु अवतारा ।

barbarīk viṣṇu avatārā |

भक्तन हेतु मनुज तनु धारा ॥ ५ ॥

bhaktan hetu manuj tanu dhārā || 5 ||

वसुदेव देवकी प्यारे ।

vasudev devakī pyāre |

यशुमति मैया नन्द दुलारे ॥ ६ ॥

yaśumati maiyā nanda dulāre || 6 ||

मधुसूदन गोपाल मुरारी ।

madhusūdan gopāl murārī |

बृजकिशोर गोवर्धन धारी ॥ ७ ॥

bṛjakiśor govardhan dhārī || 7 ||

सियाराम श्री हरि गोविन्दा ।

siyārām śrī hari govindā |

दीनपाल श्री बाल मुकन्दा ॥ ८ ॥

dīnapāl śrī bāl mukandā || 8 ||

दामोदर रणछोड़ बिहारी ।

dāmodar raṇachoṛ bihārī |

नाथ द्वारिकाधीश खरारी ॥ ९ ॥

nāth dvārikādhīś kharārī || 9 ||

नरहरि रूप प्रहलाद प्यारा ।

narahari rūp prahalād pyārā |

खम्भ फारि हिरनाकुश मारा ॥ १० ॥

khambha phāri hiranākuś mārā || 10 ||

राधा वल्लभ रुक्मिणी कंता ।

rādhā vallabh rukmiṇī kaṃtā |

गोपी वल्लभ कंस हनंता ॥ ११ ॥

gopī vallabh kaṃs hanaṃtā || 11 ||

मनमोहन चित्तचोर कहाये ।

manamohan cittacor kahāye |

माखन चोरि चोरि कर खाये ॥ १२ ॥

mākhan cori cori kar khāye || 12 ||

मुरलीधर यदुपति घनश्याम ।

muralīdhar yadupati ghanaśyām |

कृष्ण पतितपावन अभिराम ॥ १३ ॥

kṛṣṇa patitapāvan abhirām || 13 ||

मायापति लक्ष्मीपति ईसा ।

māyāpati lakṣmīpati īsā |

पुरुषोत्तम केशव जगदीश ॥ १४ ॥

puruṣottam keśav jagadīś || 14 ||

विश्वपति त्रिभुवन उजियारा ।

viśvapati tribhuvan ujiyārā |

दीन बन्धु भक्तन रखवारा ॥ १५ ॥

dīn bandhu bhaktan rakhavārā || 15 ||

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

प्रभु का भेद कोई न पाया ।

prabhu kā bhed koī na pāyā |

शेष महेश थके मुनिराया ॥ १६ ॥

śeṣ maheś thake munirāyā || 16 ||

नारद शारद ऋषि योगिन्दर ।

nārad śārad ṛṣi yogindar |

श्याम श्याम सब रटत निरन्तर ॥ १७ ॥

śyām śyām sab raṭat nirantar || 17 ||

करि कोविद करि सके न गिनन्ता ।

kari kovid kari sake na ginantā |

नाम अपार अथाह अनन्ता ॥ १८ ॥

nām apār athāh anantā || 18 ||

हर सृष्टि हर युग में भाई ।

har sṛṣṭi har yug meṃ bhāī |

ले अवतार भक्त सुखदाई ॥ १९ ॥

le avatār bhakta sukhadāī || 19 ||

हृदय माँहि करि देखु विचारा ।

hṛday mām□hi kari dekhu vicārā |

श्याम भजे तो हो निस्तारा ॥ २० ॥

śyām bhaje to ho nistārā || 20 ||

कीर पढ़ावत गणिका तारी ।

kīr paṛhāvat gaṇikā tārī |

भीलनी की भक्ति बलिहारी ॥ २१ ॥

bhīlanī kī bhakti balihārī || 21 ||

सती अहिल्या गौतम नारी ।

satī ahilyā gautam nārī |

भई श्राप वश शिला दुखारी ॥ २२ ॥

bhaī śrāp vaś śilā dukhārī || 22 ||

श्याम चरण रज नित लाई ।

śyām caraṇ raj nit lāī |

पहुँची पतिलोक में जाई ॥ २३ ॥

pahum□cī patilok meṃ jāī || 23 ||

अजामिल अरू सदन कसाई ।

ajāmil arū sadan kasāī |

नाम प्रताप परम गति पाई ॥ २४ ॥

nām pratāp param gati pāī || 24 ||

जाके श्याम नाम अधारा ।

jāke śyām nām adhārā |

सुख लहहि दुःख दूर हो सारा ॥ २५ ॥

sukh lahahi duḥkh dūr ho sārā || 25 ||

श्याम सुलोचन है अति सुन्दर ।

śyām sulocan hai ati sundar |

मोर मुकुट सिर तन पीताम्बर ॥ २६ ॥

mor mukuṭ sir tan pītāmbar || 26 ||

गल वैजयन्तिमाल सुहाई ।

gal vaijayantimāl suhāī |

छवि अनूप भक्तन मन भाई ॥ २७ ॥

chavi anūp bhaktan man bhāī || 27 ||

श्याम श्याम सुमिरहु दिनराती ।

śyām śyām sumirahu dinarātī |

शाम दुपहरि अरू परभाती ॥ २८ ॥

śām dupahari arū parabhātī || 28 ||

श्याम सारथी जिसके रथ के ।

śyām sārathī jisake rath ke |

रोड़े दूर होय उस पथ के ॥ २९ ॥

roṛe dūr hoy us path ke || 29 ||

श्याम भक्त न कहीं पर हारा ।

śyām bhakta na kahīṃ par hārā |

भीर परि तब श्याम पुकारा ॥ ३० ॥

bhīr pari tab śyām pukārā || 30 ||

रसना श्याम नाम रस पी ले ।

rasanā śyām nām ras pī le |

जी ले श्याम नाम के हाले ॥ ३१ ॥

jī le śyām nām ke hāle || 31 ||

संसारी सुख भोग मिलेगा ।

saṃsārī sukh bhog milegā |

अन्त श्याम सुख योग मिलेगा ॥ ३२ ॥

anta śyām sukh yog milegā || 32 ||

श्याम प्रभु हैं तन के काले ।

śyām prabhu haiṃ tan ke kāle |

मन के गोरे भोले भाले ॥ ३३ ॥

man ke gore bhole bhāle || 33 ||

श्याम संत भक्तन हितकारी ।

śyām saṃt bhaktan hitakārī |

रोग दोष अघ नाशै भारी ॥ ३४ ॥

rog doṣ agh nāśai bhārī || 34 ||

प्रेम सहित जे नाम पुकारा ।

prem sahit je nām pukārā |

भक्त लगत श्याम को प्यारा ॥ ३५ ॥

bhakta lagat śyām ko pyārā || 35 ||

खाटू में है मथुरा वासी ।

khāṭū meṃ hai mathurā vāsī |

पार ब्रह्म पूरण अविनासी ॥ ३६ ॥

pār brahma pūraṇ avināsī || 36 ||

सुधा तान भरि मुरली बजाई ।

sudhā tān bhari muralī bajāī |

चहुं दिशि नाना जहाँ सुनि पाई ॥ ३७ ॥

cahuṃ diśi nānā jahām suni pāī || 37 ||

वृद्ध बाल जेते नारी नर ।

vṛddha bāl jete nārī nar |

मुग्ध भये सुनि वंशी के स्वर ॥ ३८ ॥

mugdha bhaye suni vaṃśī ke svar || 38 ||

दौड़ दौड़ पहुँचे सब जाई ।

dauṛ dauṛ pahumce sab jāī |

खाटू में जहां श्याम कन्हाई ॥ ३९ ॥

khāṭū meṃ jahāṃ śyām kanhāī || 39 ||

जिसने श्याम स्वरूप निहारा ।

jisane śyām svarūp nihārā |

भव भय से पाया छुटकारा ॥ ४० ॥

bhav bhay se pāyā chuṭakārā || 40 ||

श्याम सलोने साँवरे, बर्बरीक तनु धार ।

śyām salone sāmvare, barbarīk tanu dhār |

इच्छा पूर्ण भक्त की, करो न लाओ बार ॥

icchā pūrṇa bhakta kī, karo na lāo bār ||

अर्थ

खाटू के श्याम को अहिलवती के पुत्र और भीम के पौत्र बर्बरीक तथा अपने सभी नामों वाले कृष्ण के रूप में पहचाना गया है। चालीसा नाम-महिमा से तरे भक्तों — अहल्या, अजामिल, गणिका, भीलनी — का स्मरण करती है और कहती है कि खाटू में श्याम के दर्शन करने वाला भव-भय से मुक्त होता है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।